बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – चतुर्थ **दिनांक – 16 - 01- 2021**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज विसर्ग संधि के बारे में अध्ययन करेंगे ।

विसर्ग संधि

विसर्ग संधि - जब विसर्ग से किसी स्वर या व्यंजन का मेल होता है, तो उसे ‘विसर्ग संधि ’ कहते हैं। इस सन्धि के प्रमुख नियम इस प्रकार हैं

1. यदि विसर्ग से पहले कोई ह्रस्व स्वरे और बाद में ‘र’ आ रहा हो तो विसर्ग का लोप हो । जाता है और ह्रस्व का दीर्घ हो जाता है; जैसे
   निः + रोग = नीरोग।
   निः + रस = नीरस।
2. यदि विसर्ग के बाद ‘च’, ‘छ’ या ‘श’ हो तो विसर्ग का ‘श’ हो जाता है; जैसे-
   निः + चल = निश्चल।
   निः + छल = निश्छल।
   निः + चय = निश्चय।।
3. यदि विसर्ग के परे क, ख, प, फ, ठ या श रहे तो विसर्ग का ‘ष’ हो जाता है; जैसे
   धनुः + टंकार = धनुष्टंकार।
   निः + काम = निष्काम।
   दुः + कर = दुष्कर।
4. यदि विसर्ग से परे त, थ या स रहे तो विसर्ग का ‘स्’ हो जाता है; जैसे-
   मनः + ताप =. मनस्ताप।
   निः + तार = निस्तार।

5. यदि विसर्ग से पहले ‘अ’ या ‘आ’ के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर हो और विसर्ग से परे वर्ग के प्रथम, द्वितीय और श, ष, से वर्गों को छोड़कर कोई व्यंजन हो तो विसर्ग के स्थान पर र हो जाता है; जैसे-

   निः + गुण = निर्गुण।

   निः + जल = निर्जल।

   निः + झरे = निर्झर।

   निः + धन = निर्धन।

   निः + बल = निर्बल।

6. जब विसर्ग के बाद ‘अ’ के अतिरिक्त अन्य कोई स्वर आए तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे-

   अतः + एव = अतएव।